



ओटीटी (OTT) प्लेटफॉर्म का समाज पर प्रभाव

प्रा.डॉ.शेख शरफोद्दीन फक्रोद्दीन

हिंदी विभागाध्यक्ष सहयोगी प्रोफेसर
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय बदनापुर,
तह.बदनापुर, जि. जालना (महाराष्ट्र)

सारांश (Abstract)

वर्तमान डिजिटल युग में ओवर-द-टॉप (OTT) प्लेटफॉर्म, जैसे Netflix, Amazon Prime Video, Disney+ Hotstar, Sony LIV, Zee5, JioCinema आदि, मनोरंजन और सूचना के प्रमुख माध्यम बन चुके हैं। इंटरनेट और स्मार्टफोन के प्रसार ने इन प्लेटफॉर्मों की पहुँच को अत्यधिक बढ़ा दिया है। ओटीटी प्लेटफॉर्म ने दर्शकों को समय और स्थान की सीमाओं से मुक्त करते हुए सामग्री के उपभोग का नया स्वरूप प्रदान किया है। इसके परिणामस्वरूप समाज, संस्कृति, शिक्षा, भाषा, पारिवारिक संबंध, युवाओं की जीवनशैली तथा पारंपरिक मीडिया पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। यह शोधपत्र ओटीटी प्लेटफॉर्म के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: ओटीटी प्लेटफॉर्म, समाज, डिजिटल मीडिया, संस्कृति, युवा वर्ग, मनोरंजन, सोशल मीडिया

प्रस्तावना

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने मनोरंजन उद्योग में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। पहले जहाँ टेलीविजन, रेडियो और सिनेमा मनोरंजन के मुख्य साधन थे, वहीं आज ओटीटी प्लेटफॉर्म ने इन माध्यमों को चुनौती दी है। ओटीटी का अर्थ है—ऐसी सेवाएँ जो इंटरनेट के माध्यम से वीडियो, ऑडियो और अन्य सामग्री सीधे दर्शकों तक पहुँचाती हैं।

भारत में कोविड-१९ महामारी के दौरान ओटीटी प्लेटफॉर्म का उपयोग अत्यधिक बढ़ा। लॉकडाउन के समय सिनेमाघरों के बंद होने से लोगों ने फिल्मों, वेब सीरीज और अन्य कार्यक्रमों के लिए ओटीटी का सहारा लिया। इसने न केवल मनोरंजन की आदतों को बदला, बल्कि सामाजिक व्यवहार, सांस्कृतिक मूल्यों और पारिवारिक संबंधों को भी प्रभावित किया।

ओटीटी प्लेटफॉर्म का विकास

ओटीटी सेवाओं का आरंभ वैश्विक स्तर पर Netflix और Amazon Prime जैसे प्लेटफॉर्मों से हुआ। भारत में Disney+ Hotstar, Zee5, Sony LIV, JioCinema, Aha, Hoichoi और



Planet Marathi जैसे क्षेत्रीय प्लेटफॉर्मों ने भी लोकप्रियता प्राप्त की। सस्ते इंटरनेट और स्मार्टफोन की उपलब्धता ने इसके विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समाज पर ओटीटी प्लेटफॉर्म के सकारात्मक प्रभाव

१. मनोरंजन का लोकतंत्रीकरण

ओटीटी प्लेटफॉर्म ने दर्शकों को उनकी पसंद के अनुसार सामग्री चुनने की स्वतंत्रता दी है। अब व्यक्ति अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी समय और किसी भी स्थान पर कार्यक्रम देख सकता है। इससे मनोरंजन अधिक सुलभ और लोकतांत्रिक हुआ है।

२. क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृति का विकास

ओटीटी प्लेटफॉर्म ने क्षेत्रीय भाषाओं और स्थानीय संस्कृति को वैश्विक मंच प्रदान किया है। मराठी, बंगाली, तमिल, तेलुगु, मलयालम और अन्य भाषाओं की सामग्री विश्वभर के दर्शकों तक पहुँच रही है। इससे सांस्कृतिक विविधता को प्रोत्साहन मिला है।

३. रचनात्मक स्वतंत्रता

ओटीटी प्लेटफॉर्म ने फिल्मकारों और कलाकारों को नए विषयों पर कार्य करने की स्वतंत्रता प्रदान की है। सामाजिक, ऐतिहासिक, महिला सशक्तिकरण, दलित विमर्श, पर्यावरण और समकालीन मुद्दों पर आधारित सामग्री का निर्माण बढ़ा है।

४. रोजगार के अवसर

ओटीटी उद्योग के विस्तार से लेखक, निर्देशक, अभिनेता, तकनीकी विशेषज्ञ, डिजिटल मार्केटिंग विशेषज्ञ और अन्य क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं।

५. शिक्षा और ज्ञान का प्रसार

कई ओटीटी प्लेटफॉर्म डॉक्यूमेंट्री, शैक्षणिक कार्यक्रम और ज्ञानवर्धक सामग्री भी उपलब्ध कराते हैं, जिससे दर्शकों के ज्ञान में वृद्धि होती है।

ओटीटी प्लेटफॉर्म के नकारात्मक प्रभाव

१. युवाओं में लत (Addiction)

ओटीटी प्लेटफॉर्म पर लगातार वेब सीरीज और फिल्मों को देखने की प्रवृत्ति, जिसे "बिंज वॉचिंग" कहा जाता है, युवाओं में मानसिक और शारीरिक समस्याओं को जन्म दे रही है। इससे अनिद्रा, तनाव, अवसाद और समय प्रबंधन की समस्या उत्पन्न होती है।

२. पारिवारिक संबंधों पर प्रभाव

अत्यधिक व्यक्तिगत मनोरंजन के कारण परिवार के सदस्य एक साथ समय कम बिताते हैं। इससे पारिवारिक संवाद और सामूहिक मनोरंजन की परंपरा प्रभावित हुई है।



३. सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन

कई ओटीटी कार्यक्रमों में हिंसा, अश्लीलता, अपशब्द और विवादास्पद सामग्री की अधिकता देखने को मिलती है। इससे युवाओं के नैतिक मूल्यों और सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव पड़ सकता है।

४. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ

लंबे समय तक स्क्रीन देखने से आँखों की समस्या, मोटापा, शारीरिक निष्क्रियता तथा नींद संबंधी विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

५. पारंपरिक मीडिया पर प्रभाव

ओटीटी प्लेटफॉर्म के बढ़ते प्रभाव से टेलीविजन और सिनेमा उद्योग में परिवर्तन आया है। दर्शकों की रुचि में बदलाव के कारण पारंपरिक माध्यमों को नई रणनीतियाँ अपनानी पड़ रही हैं।

युवाओं पर ओटीटी का प्रभाव

युवा वर्ग ओटीटी प्लेटफॉर्म का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। युवाओं के पहनावे, भाषा, विचारों, जीवनशैली और सामाजिक व्यवहार पर ओटीटी सामग्री का गहरा प्रभाव पड़ रहा है। सकारात्मक रूप से यह उन्हें नई जानकारी, वैश्विक संस्कृति और विविध विचारों से परिचित कराता है, जबकि नकारात्मक रूप से अत्यधिक हिंसा, नशा, अश्लीलता और अवास्तविक जीवनशैली के प्रति आकर्षण बढ़ा सकता है।

डिजिटल युग का उदय न केवल तकनीकी क्षेत्र में एक क्रांति लेकर आया है, बल्कि इसने हमारे दैनिक जीवन, मनोरंजन के तरीके और अभिव्यक्ति के माध्यमों में भी अभूतपूर्व बदलाव किया है। इंटरनेट के विस्तार और स्मार्टफोन की सुलभता ने सूचना और मनोरंजन के नए साधन उपलब्ध कराए हैं। इन परिवर्तनों में ओटीटी (ओवर-द-टॉप) प्लेटफॉर्मों का प्रसार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ओटीटी प्लेटफॉर्मों ने दर्शकों को मनोरंजन के पारंपरिक साधनों जैसे- सिनेमा और टेलीविजन से अलग हटकर डिजिटल माध्यमों का उपयोग करते हुए कंटेंट का आनंद लेने का अवसर प्रदान किया है। अब दर्शक अपनी सुविधा अनुसार कहीं भी और कभी भी अपने पसंदीदा कार्यक्रम देख सकते हैं, और इसके लिए उन्हें किसी विशिष्ट समय या स्थान पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। ओटीटी प्लेटफॉर्मों ने न केवल मनोरंजन के क्षेत्र में एक नई लहर को जन्म दिया है, बल्कि अभिव्यक्ति के लिए भी एक खुला मंच प्रस्तुत किया है। इन प्लेटफॉर्मों पर निर्माताओं को अपनी क्रिएटिविटी को बिना किसी बाधा के प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। सिनेमा और टेलीविजन के पारंपरिक सेंसरशिप नियमों से मुक्त, ओटीटी प्लेटफॉर्मों पर निर्माता समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर खुलकर बात कर सकते हैं। इसने विविध विषयों पर कंटेंट बनाने की स्वतंत्रता दी है जिसमें



अल्पसंख्यक समुदायों की आवाज़, लैंगिक मुद्दों पर आधारित कथानक, और विवादास्पद राजनीतिक विषय भी शामिल हैं। इसने दर्शकों को भी नए दृष्टिकोण और कथानकों को देखने का अवसर दिया है, जो अक्सर मुख्यधारा के मीडिया में नजरअंदाज कर दिए जाते थे। हालांकि, अभिव्यक्ति की इस स्वतंत्रता के साथ ही कंटेंट पर नियंत्रण या सेंसरशिप की मांग भी बढ़ी है। ओटीटी प्लेटफॉर्मों पर प्रसारित सामग्री की पहुँच व्यापक हो गई है, और इसने समाज के विभिन्न वर्गों में असहमति और विवाद को जन्म दिया है। धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक संवेदनाओं को ठेस पहुंचाने वाली सामग्री पर अक्सर विवाद होते हैं। इसके परिणामस्वरूप, सेंसरशिप की आवश्यकता पर चर्चा बढ़ी है और सरकार, समाज और नीति-निर्माताओं के बीच यह सवाल उठता है कि डिजिटल युग में इस अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कैसे संतुलित किया जाए। सेंसरशिप की बढ़ती प्रवृत्ति का महत्व इस बात से भी स्पष्ट होता है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और समाज की सांस्कृतिक संवेदनशीलता के बीच एक संतुलन बनाने की आवश्यकता है। ओटीटी प्लेटफॉर्मों पर उपलब्ध सामग्री व्यापक और विविधतापूर्ण होती है जिसमें न केवल मनोरंजन बल्कि विचारशील और विवादास्पद विषयों पर भी कंटेंट होता है। ऐसे में यह आवश्यक है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर आपत्तिजनक और असंवेदनशील सामग्री का अनियंत्रित प्रसार न हो क्योंकि इससे सामाजिक ताने-बाने पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए, सेंसरशिप के माध्यम से इस स्वतंत्रता को नियंत्रित करना और सामाजिक संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए इसे लागू करना महत्वपूर्ण है। अंततः, डिजिटल युग में सेंसरशिप का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज की नैतिक और सांस्कृतिक सीमाओं के बीच संतुलन बनाता है। ओटीटी प्लेटफॉर्मों पर सेंसरशिप की प्रक्रिया जटिल और बहुआयामी है जिसमें सरकार, प्लेटफॉर्म संचालक और समाज के विभिन्न वर्गों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इस संदर्भ में, यह शोध पत्र ओटीटी प्लेटफॉर्मों पर सेंसरशिप की आवश्यकता, इसकी चुनौतियों और इसके कानूनी, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं का गहन अध्ययन करने का प्रयास करेगा, ताकि डिजिटल युग में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सेंसरशिप के बीच संतुलन स्थापित किया जा सके।

एक कथन है कि “मीडिया ही संदेश है।” अर्थात् ओटीटी प्लेटफॉर्म दर्शकों को वैश्विक कंटेंट तक सीधे पहुंच प्रदान करता है- कोरियाई ड्रामा, अमेरिकी वेब सीरीज, यूरोपीय डॉक्यूमेंट्री और भारतीय स्थानीय सामग्री। यह सांस्कृतिक विविधता की दृष्टि से समृद्ध है, लेकिन पारंपरिक मनोरंजन और स्थानीय सांस्कृतिक प्रथाओं पर इसका प्रभाव भी स्पष्ट है। पहले जो सामूहिक अनुभव एक घर के आंगन या बरामदे में साझा भावनाओं के माध्यम से बनता था, अब वह डिजिटल प्लेटफॉर्म की निजी दुनिया में सीमित हो गया है।



देखा जाये तो ओटीटी प्लेटफॉर्म उपभोग की संस्कृति को बढ़ावा देता है। युवा पीढ़ी अपनी पसंद के अनुसार कंटेंट का चयन करती है, जिससे मनोरंजन न केवल देखना बल्कि पहचान, प्राथमिकता और जीवनशैली की अभिव्यक्ति बन गया है। तथा आधुनिक समाज में व्यक्तिगतता और सामाजिक दूरी बढ़ती है। ओटीटी इस दूरी को और अधिक बढ़ाता है, क्योंकि लोग पारिवारिक या पड़ोसी संवाद की बजाय अपने कमरों और निजी स्क्रीन में खो जाते हैं।

फिर भी, ओटीटी का सकारात्मक पहलू यह है कि नई प्रकार की डिजिटल सामूहिकता का अवसर प्रदान होता है। सोशल-मीडिया, ऑनलाइन फोरम और कमेंट सेक्शन के माध्यम से लोग अपने अनुभव साझा करते हैं और वैश्विक समुदाय का हिस्सा बनते हैं।

सामाजिक दृष्टि से ओटीटी प्लेटफॉर्म का प्रभाव द्विविध प्रकृति का है। एक ओर यह ज्ञान, वैश्विक दृष्टि और व्यक्तिगत स्वतंत्रता बढ़ाता है; दूसरी ओर यह पारंपरिक सामूहिक अनुभव, पारिवारिक संवाद और स्थानीय सांस्कृतिक प्रथाओं को कमजोर कर रहा है।

कस्टमाइजेशन और दर्शक की पसंद के अनुसार सामग्री की सिफ़ारिश ओटीटी का सबसे बड़ा आकर्षण बन गई है। परिणामस्वरूप, दर्शक जल्दी से जल्दी अच्छा कंटेंट देख पाते हैं, अधिक सामग्री का उपभोग करते हैं, और फिल्म देखने का अनुभव नए तरीकों से परिभाषित होता है। अब न केवल साप्ताहिक बल्कि रोज़ाना या दैनिक रिलीज़ भी आम हो गई हैं, जिससे मनोरंजन का निरंतर प्रवाह बनता है।

देखा जाये तो ओटीटी प्लेटफॉर्म ने मनोरंजन को व्यक्तिगत, सहज और वैश्विक बना दिया है। यह दर्शकों को अपनी पसंद और जीवनशैली के अनुसार अनुभव चुनने का अवसर देता है। साथ ही, यह मीडिया उद्योग और संस्कृति उद्योग के विस्तार तथा नए बाजारों तक पहुँचने की संभावनाओं को भी बढ़ाता है। इस तरह, ओटीटी केवल एक तकनीकी बदलाव नहीं, बल्कि समाज के मनोरंजन, संस्कृति और व्यवहार को नया आकार देने वाला एक शक्तिशाली माध्यम बन गया है।

भारत में ओटीटी प्लेटफॉर्म से संबद्ध प्रमुख मुद्दे

- प्रत्यक्ष विनियमन का अभाव: ओटीटी प्लेटफॉर्मों के विनियमन के लिये कोई अलग कानून या निकाय मौजूद नहीं है। वे केवल इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeITy) द्वारा शासित होते हैं।
- साइबर अपराध का खतरा : ओटीटी प्लेटफॉर्म की सदस्यता लेने की प्रक्रिया में लोग अपनी गोपनीय जानकारी (जैसे बैंक विवरण, क्रेडिट कार्ड विवरण आदि) साझा करते हैं जिसका दुरुपयोग किया जा सकता है या जहाँ साइबर अपराध का खतरा मौजूद होता है।



- दूरसंचार राजस्व स्ट्रीम पर प्रभाव: वॉयस कॉल और एसएमएस संदेशों के लिये व्हाट्सएप और टेलीग्राम जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म एयरटेल एवं जियो जैसे दूरसंचार सेवा प्रदाताओं द्वारा प्रदत्त नेटवर्क अवसंरचना का उपयोग करते हैं।
- दूरसंचार सेवा प्रदाताओं (Telecom Service Providers- TSPs) का आरोप है कि ये सुविधाएँ वॉयस कॉल, एसएमएस आदि के रूप में उनके राजस्व प्रवाह को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।
- समाज के नैतिक ताने-बाने के लिये जोखिम: आलोचकों ने हमेशा इस ओर ध्यान दिलाया है कि इन प्लेटफॉर्मों पर मौजूद कॉन्टेंट में व्याप्त फूहड़ता एवं अश्लीलता युवाओं को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है।
- सेंसरशिप की कमी के कारण ओटीटी प्लेटफॉर्म के कॉन्टेंट सामाजिक सद्भाव और समाज के नैतिक ताने-बाने को प्रभावित कर सकते हैं।

ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए कुछ नियम

- निष्पक्ष नियामक निकाय की तैनाती: वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कॉन्टेंट को विनियमित करने के लिये एक निष्पक्ष नियामक निकाय की आवश्यकता है।
- सरकार को उपभोक्ता हित और साइबर धोखाधड़ी के मुद्दों को ध्यान में रखते हुए ओटीटी पर कॉन्टेंट के सृजन के लिये सख्त दिशानिर्देश लागू करने चाहिये; साथ ही व्हाट्सएप, सिग्नल और टेलीग्राम जैसी ओटीटी संचार सेवाओं के लिये हल्के विनियमनों (light-touch regulations) का प्रबंध करना चाहिये।
- गुणवत्ता बनाए रखना, समानता को बढ़ावा देना: सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को ओटीटी प्लेटफॉर्मों में उत्पादित होने वाले डिजिटल कॉन्टेंट की गुणवत्ता सुनिश्चित करनी चाहिये, लोगों की भावनाओं को महत्व देना चाहिये और नई प्रतिभा एवं सामाजिक कॉन्टेंट को प्रोत्साहित करना चाहिये।
- दर्शकों की ज़िम्मेदारी: यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि घरों में बच्चे ओटीटी कॉन्टेंट तक अबाध पहुँच नहीं रखते हों, जब तक कि अंडरएज कॉन्टेंट तक पहुँच को सीमित करने के उद्देश्य से एक सख्त पहुँच एवं नियामक नीति स्थापित न हो गई हो।

निष्कर्ष:

ओटीटी प्लेटफॉर्म आधुनिक समाज का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुके हैं। इन्होंने मनोरंजन, सूचना और शिक्षा के क्षेत्र में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। क्षेत्रीय भाषाओं, सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। दूसरी ओर, अत्यधिक



उपयोग, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ, सांस्कृतिक परिवर्तन और पारिवारिक संबंधों पर इनके नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए हैं। अतः आवश्यक है कि ओटीटी प्लेटफॉर्म का उपयोग संतुलित और जिम्मेदारीपूर्ण ढंग से किया जाए तथा सामग्री के नियमन और मीडिया साक्षरता पर भी ध्यान दिया जाए।

संदर्भ.

1. निधि सिन्हा, 'ऑनलाइन रिलीज होने वाली फ़िल्मों' को विनियमित करना: डिजिटल युग में फ़िल्म प्रमाणन और सेंसरशिप का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण , ८ जीएनएलयू एल. रेव. ४६ (२०२१)।
2. सार्थक सरीन और सिद्धार्थ मारवाह, ओटीटी प्लेटफॉर्म और डिजिटल न्यूज मीडिया नया नियामक (और शायद एक कानूनी व्यवस्था में बदलाव), मॉडैक, (२३ नवंबर, २०२०),
3. सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यवर्ती दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, ...११ (२५ फरवरी, २०२१ को जारी)। ('सूचना प्रौद्योगिकी नियम, २०२१')
4. सूचना प्रौद्योगिकी नियम, २०२१, ...१२, १३, १४.
5. सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यवर्ती दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, आचार संहिता